UTKARSH CLASSES

For Session 2022-23

RBSE

# इतिहास

CLASS-XII

# मॉडल पेपर्स

सॉल्यूशन सहित

RBSE द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम व ब्लूप्रिंट पर आधारित नवीनतम मॉडल पेपर

# इतिहास (13)

# MODEL PAPER 3 (RBSE)

## कक्षा-XII

समय : 3 घंटे 15 मिनट पूर्णांक : 80

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यत: लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
5. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

## खंड 'अ'

**1. बहुविकल्पीय प्रश्न (12×1 = 12)**

**i. सिंधु सभ्यता का स्थल धौलावीरा निम्न में से किस राज्य में स्थित है? [1]**

(अ) राजस्थान (ब) गुजरात
(स) महाराष्ट्र (द) उत्तर प्रदेश

**ii. शासकों की प्रतिमा और नाम युक्त सिक्के किस राजवंश के राजाओं ने जारी किए? (मा.शि. बोर्ड, 2013-2015) [1]**

(अ) हिंद यूनानी शासक (ब) मौर्य शासक
(स) कुषाण शासक (द) सातवाहन शासक

**iii. संस्कृत ग्रंथों में बांधवों के बड़े समूह के लिए किसका प्रयोग किया गया? [1]**

(अ) परिवार (ब) जाति
(स) कुल (द) राष्ट्र

**iv. महाराष्ट्र में भक्ति परम्परा का विकास कब हुआ? [1]**

(अ) तेरहवीं शताब्दी में (ब) छठीं शताब्दी में
(स) सातवीं शताब्दी में (द) आठवीं शताब्दी में

**v. विजयनगर साम्राज्य में घोड़ों के व्यापारी के लिए किस शब्द का प्रयोग किया जाता था? [1]**

(अ) कुदिरई चेट्टी (ब) गजपति
(स) नरपति (द) बलाहार

**vi. विजयनगर किन वस्तुओं के बाज़ारों के लिए प्रसिद्ध था? [1]**

(अ) मसालों (ब) वस्त्रों
(स) रत्नों (द) उपरोक्त सभी

**vii. वे किसान जो उन्हीं गाँवों में रहते थे जिनमें उनकी ज़मीन थीं, क्या कहलाते थे? [1]**

(अ) खुद-काश्त (ब) पाहि-काश्त
(स) उपर्युक्त दोनों (द) इनमें से कोई भी नहीं

**viii. अकबरनामा का अंग्रेज़ी अनुवाद किसके द्वारा किया गया था?[1]**

(अ) हेनरी बेवरिज़ (ब) थॉमस मुनरो
(स) विल्किंसन (द) जेम्स मिल

**ix. भारतीय सैनिकों के प्रति दया और सहानुभूति दिखाए जाने की नीति पर किसका ब्रिटिश प्रेस में मज़ाक उड़ाया गया? [1]**

(अ) लॉर्ड डलहौजी (ब) लॉर्ड कैनिंग
(स) लॉर्ड इरविन (द) लॉर्ड वेलेजली

**x. दिल्ली में गाँधीजी के अनशन का असर "आसमान की बिजली" जैसा रहा, यह कथन किसका है? [1]**

(अ) मौलाना आज़ाद (ब) वल्लभ भाई पटेल
(स) रहमत अली (द) मोहम्मद अली जिन्ना

**xi. संविधान सभा में कुल कितने सदस्य थे? [1]**

(अ) 150 सदस्य (ब) 200 सदस्य
(स) 300 सदस्य (द) 540 सदस्य

**xii. निम्नलिखित में से कौनसे व्यक्ति पृथक् निर्वाचिका की माँग के समर्थन में नहीं थे? [1]**

(अ) मोहम्मद अली जिन्ना (ब) बी. पोकर बहादुर
(स) बेगम ऐज़ाज़ रसूल (द) इनमें से कोई नहीं

**2. रिक्त स्थान की पूर्ति करो- (प्रत्येक 1 अंक)**

**i प्रारंभ में ____________ मगध की राजधानी थी। [1]**

**ii देवी की आराधना पद्धति को __________नाम से जाना जाता है। (माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2011-2012) [1]**

**iii. जॉन लॉरेंस ने ____________ ईसवी में अधिकृत रूप से अपनी काउंसिल शिमला में स्थानांतरित की। [1]**

**iv. 1929 में दिसंबर के अंत में कांग्रेस ने अपना वार्षिक अधिवेशन ___________ शहर में किया। [1]**

**v. भारत के संवैधानिक सलाहकार _________ थे। [1]**

**3. अति लघुउत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 1 अंक)**

**i. हड़प्पा सभ्यता के कौन से स्थान शंख के निर्माण के विशिष्ट केंद्र थे? [1]**

**ii. हस्तिनापुर नामक गाँव में उत्खनन कार्य कब और किसके नेतृत्व में किया गया? [1]**

**iii. मनुस्मृति के आधार पर पुरूषों के लिए सम्पति अर्जन के कोई चार तरीके बताइए। (माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2015) [1]**

**iv. अल-बिरुनी का जन्म कब और कहाँ हुआ था? (माध्य.शिक्षा बोर्ड, 2016) [1]**

**v. अलवार-नयनार संत परम्परा की दो स्त्री भक्तों के नाम लिखिए। [1]**

**vi. विजयनगर साम्राज्य किन दो नदियों के दोआब में फला फूला?[1]**

**vii. "जात" व "सवार" से आप क्या समझते हैं? [1]**



Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

viii. मद्रास में इंडो-सारसेनिक स्थापत्य शैली में निर्मित भवन कौनसा है? [1]

ix. किसकी जिद के कारण 1945 में अंग्रेज़ों द्वारा एक केंद्रीय कार्यकारिणी सभा बनाने के प्रस्ताव पर वार्ता टूट गई? [1]

x. ब्रिटिश मंत्रिमंडल ने कैबिनेट मिशन को भारत क्यों भेजा? [1]

xi. "अंग्रेज़ों ने संरक्षण के नाम पर अपना खेल खेला। इसकी आड़ में उन्होंने तुम्हें (अल्पसंख्यकों) फुसला लिया है।" यह कथन किसका है? [1]

xii. पृथक निर्वाचिका के प्रस्ताव के विरोध में वल्लभ भाई पटेल ने क्या कहा था? [1]

## खण्ड-"ब"

**लघुउत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 2 अंक)**

4. महाभारत का समालोचनात्मक संस्करण की प्रक्रिया से कौनसी दो बातें उभर कर सामने आईं? [2]
5. साँची के स्तूप के संरक्षण में भोपाल की बेगमों के योगदान का वर्णन कीजिए। [2]
6. साँची की मूर्तियों पर किन जानवरों का उत्कीर्णन मिलता है? इन मूर्तियों पर जानवरों का उत्कीर्णन क्यों किया गया था? [2]
7. बुद्ध के द्वारा गृह त्याग के क्या कारण थे? (माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2015) [2]
8. अलबिरूनी के अनुसार "जाति व्यवस्था में सन्निहित अपवित्रता की अवधारणा प्रकृति के नियमों के विरुद्ध थी।" स्पष्ट कीजिए। [2]
9. इब्नबतूता ने नारियल व पान का विवरण किस प्रकार दिया? [2]
10. कृष्णदेव राय की उपलब्धियों का वर्णन कीजिए। [2]
11. "रहट" से आप क्या समझते हैं? क्या यह पद्धति वर्तमान समय में काम लाई जाती है? [2]
12. मुग़लकालीन भूराजस्व प्रणाली में दीवान की भूमिका की विवेचना कीजिये। (माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2015) [2]
13. मुग़ल बादशाहों द्वारा तैयार करवाए गए इतिवृत्तों की रचना के क्या उद्देश्य थे? (माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2015) [2]
14. राजस्व राशि के भुगतान में ज़मींदार चूक क्यों करते थे? [2]
15. पाँचवीं रिपोर्ट क्या थी? [2]
16. कैबिनेट मिशन के त्रिस्तरीय महासंघ सुझावों का मूल्यांकन कीजिये। (मा. शि. बोर्ड, 2015) [2]

## खंड 'स'

**दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 3 अंक)**

17. अभिलेख किसे कहते हैं? वर्तमान इतिहास लेखन में अभिलेख साक्ष्यों की उपयोगिता सिद्ध कीजिये। (मा.शि. बोर्ड, 2011, 2012, 2014) [3]
18. अलवार व नयनार संतों का जाति के प्रति दृष्टिकोण कैसा था? [3]
19. 1857 के विद्रोह में शाहमल की भूमिका का वर्णन कीजिए। [3]
20. आप कैसे कह सकते हैं कि औपनिवेशिक सरकार के लिए शहरों के मानचित्र तैयार करवाना उपयोगी था? [3]

## खण्ड-"द"

**निबन्धात्मक प्रश्न (प्रत्येक 4 अंक)**

21. हड़प्पावासी किस प्रकार के शिल्प उत्पादन कार्यों में संलग्न थे? उनके निर्माण की विधियों का भी विस्तृत वर्णन दीजिये। [4]

**अथवा**

"कनिंघम हड़प्पा के महत्व को समझने में चूक गए। जबकि 1924 ईसवी में जॉन मार्शल ने पूरे विश्व के समक्ष सिंधु घाटी में एक नवीन सभ्यता की खोज की घोषणा की।" व्याख्या सहित स्पष्ट कीजिये।

22. "जन नेता के रूप में महात्मा गाँधी" के उत्थान का मूल्यांकन कीजिए। (मा. शि. बोर्ड, 2022) [4]

**अथवा**

असहयोग आंदोलन एक तरह का प्रतिरोध कैसे था? उल्लेख कीजिए। (मा. शि. बोर्ड, 2016)

23. भारत के मानचित्र में निम्नलिखित ऐतिहासिक स्थलों को अंकित कीजिए- [5]

(अ) राजगृह
(ब) बरेली
(स) लखनऊ
(द) ग्वालियर
(य) कुरु

**अथवा**

भारत के मानचित्र में निम्नलिखित ऐतिहासिक स्थलों को अंकित कीजिए-

(अ) राखीगढ़ी
(ब) मेरठ
(स) कलकत्ता
(द) मद्रास
(य) गांधार

♦ ♦ ♦



Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

## उत्तरमाला मॉडल पेपर – 03

### खंड 'अ'

**1.**

**i.** **[ब]** गुजरात
सिंधु सभ्यता का स्थल धौलावीरा गुजरात राज्य में स्थित है। यहां से एक जलाशय प्राप्त हुआ है।

**ii.** **[अ]** हिंद यूनानी शासक
शासकों की प्रतिमा और नाम के साथ सबसे पहले सिक्के हिंद- यूनानी शासकों ने जारी किए थे जिन्होंने द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व में उपमहाद्वीप के पश्चिमोत्तर क्षेत्र पर नियंत्रण स्थापित किया था।

**iii.** **[ब]** जाति
संस्कृत ग्रंथों में बांधवों के बड़े समूह के लिए 'जाति' शब्द का तथा परिवार के लिए 'कुल' शब्द का प्रयोग होता है।

**iv.** **[अ]** तेरहवीं शताब्दी में
महाराष्ट्र में भक्ति परंपरा का विकास तेरहवीं शताब्दी में हुआ। मध्यवर्ती शताब्दियों में तमिल भक्तों के विचारों को संस्कृत परंपरा में समाहित कर लिया गया जिसका परिणाम सर्वाधिक प्रसिद्ध पुराणों में से एक भागवत पुराण की रचना हुई।

**v.** **[अ]** कुदिरई चेट्टी
मध्यकाल में युद्धकला प्रभावशाली अश्व सेना पर आधारित होती थी, इसीलिए प्रतिस्पर्धी राज्यों के लिए अरब तथा मध्य एशिया से घोड़ों का आयात बहुत महत्वपूर्ण था। व्यापारियों के स्थानीय समूह जो घोड़ों का व्यापार करते थे उन्हें कुदिरई चेट्टी कहा जाता था।

**vi.** **[द]** उपर्युक्त सभी
विजयनगर साम्राज्य मसालों, वस्तुओं तथा रत्नों के अपने बाजारों के लिए प्रसिद्ध था। व्यापार प्रतिष्ठा का मानक माना जाता था। यहां की समृद्ध जनता महंगी विदेशी वस्तुओं की मांग करती थी।

**vii.** **[अ]** खुद-काश्त
मुग़ल काल के भारतीय फारसी स्रोत दो किस्म के किसानों की चर्चा करते हैं। खुदकाश्त व पाहिकास्त । वे किसान  जो उन्हीं गांवों में रहते थे जिनमें उनकी जमीन थीं, उन्हें खुदकाश्त कहा गया।

**viii.** **[अ]** हेनरी बेवरिज़ द्वारा
1784 में सर विलियम जॉन्स द्वारा एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़ बंगाल की स्थापना की गई जिसने भारतीय पांडुलिपियों के संपादन, प्रकाशन और अनुवाद का जिम्मा  उठाया। बीसवीं शताब्दी के आरंभ में हेनरी बेवरिज द्वारा अकबरनामा का अंग्रेजी अनुवाद किया गया।

**ix.** **[ब]** लॉर्ड कैनिंग
गवर्नर जनरल कैनिंग द्वारा भारतीय सैनिकों के प्रति दया और सहानुभूति दिखाई जाने की नीति पर ब्रिटिश प्रेस  में मज़ाक उड़ाया गया।हास्य व्यंग्य की ब्रिटिश पत्रिका पन्च के पन्नों में प्रकाशित एक कार्टून में कैनिंग को एक भव्य बुजुर्ग के रूप में दर्शाया गया।

**x.** **[अ]** मौलाना आज़ाद का
मौलाना आज़ाद ने लिखा है कि दिल्ली में गांधी जी के अनशन का असर,"आसमान की बिजली" जैसा रहा। लोगों को मुसलमानों के सफ़ाए के अभियान की निरर्थकता दिखाई देने लगी। दिल्ली के बहुत सारे मुसलमानों ने बाद में कहा, "दुनिया सच्चाई की राह पर आ गई थी।"

**xi.** **[स]** 300 सदस्य
भारतीय संविधान 26 जनवरी 1950 को अस्तित्व में आया और यह दुनिया का सबसे लंबा संविधान है ।संविधान सभा में 300 सदस्य थे।

**xii.** **[अ]** बेगम ऐज़ाज़ रसूल
27 अगस्त 1947 को मद्रास के बी. पोकर बहादुर ने पृथक निर्वाचिका को बनाए रखने के पक्ष में प्रभावशाली भाषण दिया। मोहम्मद अली जिन्ना मुसलमानों के लिए पूर्णतः पृथक निर्वाचन चाहते थे। बेगम एजाज़ रसूल का मानना था कि पृथक निर्वाचिका आत्मघाती साबित होगी क्योंकि इससे अल्पसंख्यक बहुसंख्यकों से कट जाएंगे।

**2.**

**i.** राजगाह
**ii.** तांत्रिक
**iii.** 1864
**iv.** लाहौर
**v.** बी.एन. राव

**3.**

**i.** “नागेश्वर तथा बालाकोट” ।
**ii.** 1951-52 में बी.बी. लाल के नेतृत्व में।
**iii.** 1. विरासत 2. खोज 3. खरीद 4. विजित करके।
**iv.** ख़्वारिज़्म में, सन् 973 में।
**v.** 1. अंडाल 2. करइक्काल अम्मइयार।
**vi.** "कृष्णा-तुंगभद्रा" नदियों के दोआब में ।
**vii.** “जात” शाही पदानुक्रम में मनसबदार के पद और वेतन का सूचक था। और “सवार” यह सूचित करता था कि सेवा में कितने घुड़सवार रखना अपेक्षित था।
**viii.** मद्रास लॉ कोर्ट्स।
**ix.** मोहम्मद अली जिन्ना की जिद के कारण।
**x.** मुस्लिम लीग की माँग का अध्ययन करने तथा स्वतंत्र भारत के लिए एक उचित राजनीतिक रूपरेखा सुझाने के लिए।
**xi.** आर.वी. धुलेकर का।
**xii.** पृथक निर्वाचिका एक ऐसा "विष है जो हमारे देश की पूरी राजनीति में समा चुका है।" यह एक ऐसी माँग थी जिसने एक समुदाय को दूसरे समुदाय से भिड़ा दिया, राष्ट्र के टुकड़े कर दिए, रक्तपात को जन्म दिया और देश के विभाजन का कारण बनी।

### खण्ड-"ब"

**4.** समालोचनात्मक संस्करण की पूरी प्रक्रिया में दो बातें विशेष रूप से उभर कर आई :

i. संस्कृत के कई पाठों के अनेक अंशों में समानता थी। समूचे उपमहाद्वीप में उत्तर में कश्मीर और नेपाल से लेकर दक्षिण में केरल और तमिलनाडु तक सभी पांडुलिपियों में यह समानता देखने में आई।

ii. शताब्दियों के दौरान हुए महाभारत के प्रेषण में अनेक क्षेत्रीय प्रभेद भी उभर कर सामने आए। इन प्रभेदों का संकलन मुख्य पाठ की पादटिप्पणियों और परिशिष्टों के रूप में किया गया। 13,000 पृष्ठों में से आधे से भी अधिक इन प्रभेदों का ब्योरा देते हैं।

ये प्रभेद उन गूढ़ प्रक्रियाओं के द्योतक हैं जिन्होंने प्रभावशाली परंपराओं और लचीले स्थानीय विचार और आचरण के बीच संवाद कायम करके सामाजिक इतिहासों को रूप दिया था। यह संवाद द्वंद्व और मतैक्य दोनों को ही चित्रित करते हैं।



UTKARSH CLASSES
Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

**5.** भोपाल के शासकों, शाहजहाँ बेगम और उनकी उत्तराधिकारी सुल्तानजहाँ बेगम, ने इस प्राचीन स्थल के रख-रखाव के लिए धन का अनुदान दिया। सुल्तानजहाँ बेगम ने वहाँ पर एक संग्रहालय और अतिथिशाला बनाने के लिए अनुदान दिया। वहाँ रहते हुए ही जॉन मार्शल ने पुस्तकें लिखीं। इस पुस्तक के विभिन्न खंडों के प्रकाशन में भी सुल्तानजहाँ बेगम ने अनुदान दिया।

**6.** साँची की मूर्तियों में जानवरों के कुछ बहुत खूबसूरत उत्कीर्णन पाए गए हैं। इन जानवरों में हाथी, घोड़े, बंदर और गाय-बैल शामिल हैं। साँची में जातकों से ली गई जानवरों की कई कहानियाँ हैं। लोगों को आकर्षित करने के लिए जानवरों का उत्कीर्णन किया गया था। जानवरों को मनुष्यों के गुणों के प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। उदाहरण के लिए, हाथी शक्ति और ज्ञान के प्रतीक माने जाते थे।

**7.** सिद्धार्थ शाक्य कबीले के सरदार के बेटे थे। जीवन के कटु यथार्थों से दूर उन्हें महल की चारदीवारी के अंदर सब सुखों के बीच बड़ा किया गया। बाहरी दुनिया की उनकी पहली यात्रा काफ़ी पीड़ादायक रही। एक वृद्ध व्यक्ति को, एक बीमार को और एक लाश को देखकर उन्हें गहरा सदमा पहुँचा। उसी क्षण उन्हें यह अनुभूति हुई कि मनुष्य के शरीर का क्षय और अंत निश्चित है। उन्होंने एक गृहत्याग किए संन्यासी को भी देखा उसे मानो बुढ़ापे, बीमारी और मृत्यु से कोई परेशानी नहीं थी और उसने शांति प्राप्त कर ली थी। सिद्धार्थ ने निश्चय किया कि वे भी संन्यास का रास्ता अपनाएँगे। कुछ समय के बाद महल त्याग कर वे अपने सत्य की खोज में निकल गए।

**8.** जाति व्यवस्था के संबंध में ब्राह्मणवादी व्याख्या को मानने के बावजूद, अल-बिरूनी ने "अपवित्रता की मान्यता" को अस्वीकार किया। उसने लिखा कि हर वह वस्तु जो अपवित्र हो जाती है, अपनी पवित्रता की मूल स्थिति को पुन: प्राप्त करने का प्रयास करती है और सफल होती है। सूर्य हवा को स्वच्छ करता है और समुद्र में नमक पानी को गंदा होने से बचाता है। अल-बिरूनी जोर देकर कहता है कि यदि ऐसा नहीं होता तो पृथ्वी पर जीवन असंभव होता। उसके अनुसार जाति व्यवस्था में सन्निहित अपवित्रता की अवधारणा प्रकृति के नियमों के विरुद्ध थी।

**9.** इब्न बतूता नारियल और पान का वर्णन करता है।
नारियल का वर्णन :- ये वृक्ष स्वरूप से सबसे अनोखे तथा प्रकृति में सबसे विस्मयकारी वृक्षों में से एक हैं। ये हू-बहू खजूर के वृक्ष जैसे दिखते हैं। नारियल के वृक्ष का फल मानव सिर से मेल खाता है क्योंकि इसमें भी मानो दो आँखे तथा एक मुख है और अंदर का भाग हरा होने पर मस्तिष्क जैसा दिखता है और इससे जुड़ा रेशा बालों जैसा दिखाई देता है। वे इससे रस्सी बनाते हैं। लोहे की कीलों के प्रयोग के बजाय इनसे जहाज को सिलते हैं। वे इससे बर्तनों के लिए रस्सी भी बनाते हैं।
पान का वर्णन :- पान एक ऐसा वृक्ष है जिसे अंगूर-लता की तरह ही उगाया जाता है, पान का कोई फल नहीं होता और इसे केवल इसकी पत्तियों के लिए ही उगाया जाता है, इसे खाने से पहले सुपारी ली जाती है, इसे तब तक तोड़ा जाता है जब तक इसके छोटे-छोटे टुकड़े नहीं हो जाते। इसके बाद पान की पत्तियों के साथ इन्हें चबाया जाता है।

**10.**
- i. कृष्णदेव राय के शासन की चारित्रिक विशेषता विस्तार और दृढ़ीकरण था।
- ii. 1512 में तुंगभद्रा और कृष्णा नदियों के बीच का क्षेत्र रायचूर दोआब हासिल किया गया।
- iii. 1514 में, उड़ीसा के शासकों का दमन किया।
- iv. 1520 ई. में बीजापुर के सुल्तान को बुरी तरह पराजित किया गया था।
- v. अतुलनीय शांति और समृद्धि के साथ विजयनगर साम्राज्य खूब फला-फूला।
- vi. कुछ बेहतरीन मंदिरों के निर्माण तथा कई महत्वपूर्ण दक्षिण भारतीय मंदिरों में भव्य गोपुरमों को जोड़ने का श्रेय कृष्णदेव को ही जाता है।
- vii. अपनी माँ के नाम पर विजयनगर के समीप ही नगलपुरम् नामक उपनगर की स्थापना भी कृष्णदेव राय ने की थी।
- viii. शासनकला के विषय में अमुक्तमल्यद नामक तेलुगु भाषा में कृति लिखी।

**11.** "रहट" सिंचाई करने की एक तकनीक है जिसका उल्लेख "बाबरनामा" में मिलता है। वर्तमान में लाहौर, दीपालपुर और ऐसी दूसरी जगहों पर लोग रहट के जरिये सिंचाई करते हैं। रस्सी के दो गोलाकार फंदे बनाते हैं। इन फंदों में थोड़ी-थोड़ी दूरी पर लकड़ी के गुटके लगाकर इन पर घड़े बाँध देते हैं। लकड़ी के गुटकों और घड़ों से बँधी इन रस्सियों को कुएँ के ऊपर पहियों से लटकाया जाता है। पहिये की धुरी पर एक और पहिया। इस अंतिम पहिये को बैल के ज़रिये घुमाया जाता है। घड़ों से जहाँ पानी गिरता है, वहाँ एक संकरा नाला खोद दिया जाता है और इस तरीके से हर जगह पानी पहुँचाया जाता।

**12.** मुग़ल साम्राज्य में दीवान पर पूरे राज्य की वित्तीय व्यवस्था के देख-रेख की ज़िम्मेदारी थी इस तरह हिसाब रखने वाले और राजस्व अधिकारी खेती की दुनिया में दाखिल हुए। लोगों पर कर का बोझ निर्धारित करने से पहले मुग़ल राज्य ने ज़मीन और उस पर होने वाले उत्पादन के बारे में खास किस्म की सूचनाएँ इकट्ठा करने की कोशिश की। भू-राजस्व के इंतजामात में दो चरण थे : पहला, कर निर्धारण (जमा निर्धारित रकम थी) और दूसरा, वास्तविक वसूली (हासिल सचमुच वसूली गई रकम)।

**13.** मुग़ल बादशाहों द्वारा तैयार करवाए गए इतिवृत्त साम्राज्य और उसके दरबार के अध्ययन के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। ये इतिवृत्त इस साम्राज्य के अंतर्गत आने वाले सभी लोगों के सामने एक प्रबुद्ध राज्य के दर्शन की प्रायोजना के उद्देश्य से लिखे गए थे। इनका उद्देश्य उन लोगों को, जिन्होंने मुग़ल शासन का विरोध किया था, यह बताना भी था कि उनके सारे विरोधों का असफल होना नियत है। शासक यह भी सुनिश्चित कर लेना चाहते थे कि भावी पीढ़ियों के लिए उनके शासन का विवरण उपलब्ध रहे।

**14.** इस्तमरारी बंदोबस्त के बाद ज़मींदारों की चूक के कारण :-
- i. प्रारंभिक माँगें बहुत ऊँची थी, क्योंकि ऐसा महसूस किया गया था कि यदि माँग को आने वाले संपूर्ण समय के लिए निर्धारित किया जा रहा है तो आगे चलकर कीमतों में बढ़ोतरी होने और खेती का विस्तार होने से आय में वृद्धि हो जाने पर भी कंपनी उस वृद्धि में अपने हिस्से का दावा कभी नहीं कर सकेगी।
- ii. यह ऊँची माँग 1790 के दशक में लागू की गई थी जब कृषि की उपज़ की कीमतें नीची थीं, जिससे रैयत (किसानों) के लिए, ज़मींदार को उनकी देय राशियाँ चुकाना मुश्किल था।
- iii. राजस्व निश्चित था, फ़सल अच्छी हो या खराब राजस्व का ठीक समय पर भुगतान ज़रूरी था। वस्तुतः सूर्यास्त विधि (कानून) के अनुसार, यदि निश्चित तारीख़ को सूर्य अस्त होने तक भुगतान नहीं आता था तो ज़मींदारी को नीलाम किया जा सकता था।
- iv. ज़मींदार की शक्ति को रैयत से राजस्व इकट्ठा करने और अपनी ज़मींदारी का प्रबंध करने तक ही सीमित कर दिया था।

**15.** 'पाँचवीं रिपोर्ट' एक प्रवर समिति द्वारा तैयार की गई थी।

i. पाँचवीं रिपोर्ट सन् 1813 में ब्रिटिश संसद में पेश की गई थी।

ii. यह उन रिपोर्टों में से थी जो भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रशासन तथा क्रियाकलापों के विषय में तैयार की गई थी।

iii. अक्सर 'पाँचवीं रिपोर्ट' के नाम से उल्लिखित यह रिपोर्ट 1002 पृष्ठों में थी।

iv. इसके 800 से अधिक पृष्ठ परिशिष्टों के थे।

v. इसमें ज़मींदारों और रैयतों की अर्जियाँ, भिन्न-भिन्न जिलों के कलेक्टरों की रिपोर्टें, राजस्व विवरणियों से संबंधित सांख्यिकीय तालिकाएँ और अधिकारियों द्वारा बंगाल और मद्रास के राजस्व तथा न्यायिक प्रशासन पर लिखित टिप्पणियाँ शामिल की गई थीं।

**16.** मार्च 1946 में ब्रिटिश मंत्रिमंडल ने तीन-सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल दिल्ली भेजा।

केबीनेट मिशन के सुझाव :- केबीनेट मिशन ने एक ढीले-ढाले त्रिस्तरीय महासंघ का सुझाव दिया। इसमें भारत एकीकृत ही रहने वाला था जिसकी केंद्रीय सरकार काफ़ी कमजोर होती और उसके पास केवल विदेश, रक्षा और संचार का ज़िम्मा होता। संविधान सभा का चुनाव करते हुए मौजूदा प्रांतीय सभाओं को तीन हिस्सों में समूहबद्ध किया जाना था :- हिंदू-बहुल प्रांतों को समूह 'क'। पश्चिमोत्तर मुस्लिम-बहुल प्रांतों को समूह 'ख'। पूर्वोत्तर (असम सहित) के मुस्लिम-बहुल प्रांतों को समूह 'ग' में रखा गया था। प्रांतों के इन खण्डों या समूहों को मिला कर क्षेत्रीय ईकाइयों का गठन किया जाना था। माध्यमिक स्तर की कार्यकारी और विधायी शक्तियाँ उनके पास ही रहने वाली थीं।

## खंड 'स'

**17.** अभिलेख का अर्थ :- अभिलेख उन्हें कहते हैं जो पत्थर, धातु या मिट्टी के बर्तन जैसी कठोर सतह पर खुदे होते हैं।

अभिलेख साक्ष्य की उपयोगिता :- अभिलेखों में उन लोगों की उपलब्धियाँ, क्रियाकलाप या विचार लिखे जाते हैं जो उन्हें बनवाते हैं। इनमें राजाओं के क्रियाकलाप तथा महिलाओं और पुरुषों द्वारा धार्मिक संस्थाओं को दिए गए दान का ब्यौरा होता है यानी अभिलेख एक प्रकार के स्थायी प्रमाण होते हैं। कई अभिलेखों में इनके निर्माण की तिथि भी खुदी होती है। जिन पर तिथि नहीं मिलती है उनका काल निर्धारण आमतौर पर पुरालिपि अथवा लेखन शैली के आधार पर काफ़ी सुस्पष्टता से किया जा सकता है।

प्राचीनतम अभिलेख प्राकृत भाषाओं में लिखे जाते थे। अजातसत्तु और असोक जैसे शासकों के नाम प्राकृत भाषा में लिखे गए हैं, क्योंकि यह नाम प्राकृत अभिलेखों से प्राप्त हुए हैं।

**18.** अलवार व नयनार संतों का जाति के प्रति दृष्टिकोण :- अलवार और नयनार संतों ने जाति प्रथा व ब्राह्मणों की प्रभुता के विरोध में आवाज़ उठाई। भक्ति संत विविध समुदायों से थे जैसे ब्राह्मण, शिल्पकार, किसान और कुछ तो उन जातियों से आए थे जिन्हें "अस्पृश्य" माना जाता था।

चतुर्वेदी (चारों वेदों के ज्ञाता ब्राह्मण) और "अस्पृश्य" :- यह उद्धरण तोंदराडिप्पोडि नामक एक ब्राह्मण अलवार के काव्य से लिया गया है जिसमें बताया गया है कि चतुर्वेदी जो अजनबी हैं और तुम्हारी सेवा के प्रति निष्ठा नहीं रखते, उनसे भी ज्यादा आप (हे विष्णु) उन "दासों" को पसंद करते हैं, जो आपके चरणों से प्रेम रखते हैं, चाहे वे वर्ण-व्यवस्था के परे हों।

शास्त्र या भक्ति :- यह छंद अप्पार नामक नयनार संत की रचना है: हे धूर्तजन, जो तुम शास्त्र को उद्धृत करते हो तुम्हारा गोत्र और कुल भला किस काम का? तुम केवल मारपेरू के स्वामी (शिव जो तमिलनाडु के तंजावुर जिले के मारपेरू में बसते हैं।) को अपना एकमात्र आश्रयदाता मानकर नतमस्तक हो। इससे स्पष्ट है कि संत वर्ण व्यवस्था में विश्वास न करके भक्ति का समर्थन करते थे।

इसी प्रकार मीरा के गुरु रैदास थे, जो एक चर्मकार थे। उनके रचित पद गुजरात व राजस्थान के गरीब “नीच जाति” के लोगों द्वारा आज भी गाए जाते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि अलवार तथा नयनार संतों ने जातिवादी समाज की रूढ़ियों का उल्लंघन किया।

**19.** शाहमल का संबंध :- शाहमल उत्तर प्रदेश के बड़ौत परगना के एक बड़े गाँव के रहने वाले थे। वह एक जाट कुटुम्ब से संबंध रखते थे जो चौरासी देस (चौरासी गाँव) में फैला हुआ था। इस इलाके की ज़मीन सिंचाई की सुविधाओं से लैस और उपजाऊ थी। यहाँ कि मिट्टी काली नम थी। ब्रिटिश भूराजस्व व्यवस्था द्वारा लगान की दर व वसूली सख्त कर दी गई तथा व्यापारियों व महाजनों की ज़मीनें छिन ली गई।

शाहमल का योगदान :-

i. शाहमल द्वारा मुखियाओं तथा काश्तकारों को संगठित करना :- शाह मल ने चौरासी देस के मुखियाओं और काश्तकारों को संगठित किया। इसके लिए उन्होंने रात के साए में गाँव-गाँव जाकर बात की और लोगों को अंग्रेज़ों के खिलाफ़ विद्रोह के लिए तैयार किया। बहुत सारे दूसरे स्थानों की तरह यहाँ भी अंग्रेज़ों के खिलाफ़ आंदोलन एक व्यापक विद्रोह में तब्दील हो गया।

ii. किसानों द्वारा विद्रोह :- किसान अपने खेत छोड़कर निकल पड़े और महाजनों व व्यापारियों के घर-बार लूटने लगे। बेदखल भूस्वामियों ने छिन चुकी जमीनों पर दोबारा कब्जा कर लिया। शाह मल के आदमियों ने सरकारी इमारतों पर हमला किया, नदी का पुल ध्वस्त कर दिया और पक्की सड़कों को खोद डाला।

iii. दिल्ली में विद्रोहियों की मदद :- शाहमल ने दिल्ली में विद्रोह करने वाले सिपाहियों को रसद पहुँचाई और ब्रिटिश हेडक्वार्टर व मेरठ के बीच तमाम सरकारी संचार बंद कर दिया।

iv. न्याय-भवन द्वारा विवादों के फैसले :- शाह मल ने एक अंग्रेज़ अफ़सर के बंगले में डेरा डाला। उसे "न्याय भवन" का नाम दिया और वहीं से झगड़ों और विवादों का फैसला करने लगे। उन्होंने गुप्तचरों का भी हैरतअंगेज नेटवर्क स्थापित कर लिया था।

शाहमल की मृत्यु :- कुछ समय के लिए लोगों को लगा कि फ़िरंगी राज ख़त्म हो चुका है और उनका राज आ गया है। जुलाई 1857 में शाह मल को युद्ध में मार दिया गया।

**20.**

I. औपनिवेशिक शासन बेहिसाब आंकड़ों और जानकारियों के संग्रह पर आधारित था।

औपनिवेशिक रिकॉर्ड्स की आवश्यकता के कारण :-

i. अंग्रेज़ों ने अपने व्यावसायिक मामलों को चलाने के लिए व्यापारिक गतिविधियों का विस्तृत ब्यौरा रखा था।

ii. बढ़ते शहरों में जीवन की गति और दिशा पर नज़र रखने के लिए वे नियमित रूप से सर्वेक्षण करते थे। सांख्यिकीय आँकड़े इकट्ठा करते थे और विभिन्न प्रकार की सरकारी रिपोर्टें प्रकाशित करते थे।

II. मानचित्रों का निर्माण करने के कारण :- प्रारंभिक वर्षों से ही औपनिवेशिक सरकार ने मानचित्र तैयार करने पर खास ध्यान दिया।

i. सरकार का मानना था कि किसी जगह की बनावट और भूदृश्य को समझने के लिए नक़्शे जरूरी होते हैं।

ii. इस जानकारी के सहारे वे इलाके पर ज़्यादा बेहतर नियंत्रण कायम कर सकते थे।

iii. जब शहर बढ़ने लगे तो न केवल उनके विकास की योजना तैयार करने के लिए बल्कि व्यवसाय को विकसित करने और अपनी सत्ता मजबूत करने के लिए भी नक़्शे बनाये जाने लगे।

iv. शहरों के नक़्शों से हमें उस स्थान पर पहाड़ियों, नदियों व हरियाली का पता चलता है। ये सारी चीज़ें रक्षा संबंधी उद्देश्यों के लिए योजना तैयार करने में बहुत काम आती हैं।

v. इसके अलावा घाटों की जगह, मकानों की सघनता और गुणवत्ता तथा सड़कों की स्थिति आदि से इलाके की व्यावसायिक संभावनाओं का पता लगाने और कराधान (टैक्स व्यवस्था) की रणनीति बनाने में मदद मिलती है।

vi. उन्नीसवीं सदी के आखिर से अंग्रेज़ों ने वार्षिक नगर पालिका कर वसूली के ज़रिए शहरों के रखरखाव के वास्ते पैसा इकट्ठा करने की कोशिशें शुरू कर दी थी।

vii. शहरों के फैलाव पर नज़र रखने के लिए नियमित रूप से लोगों की गिनती की जाती थी।

## खण्ड-"द"

**21.** हड़प्पावासी विभिन्न प्रकार के शिल्प उत्पादन कार्यों में संलग्न थे। हड़प्पा सभ्यता में निम्नलिखित शिल्प कार्य प्रचलित थे :- मनके बनाना, शंख की कटाई, धातुकर्म, मुहर निर्माण तथा बाट बनाना सम्मिलित थे।

मनकों के निर्माण में प्रयुक्त पदार्थों की विविधता :- कार्नीलियन (सुंदर लाल रंग का), जैस्पर, स्फटिक, क्वार्ट्ज तथा सेलखड़ी जैसे पत्थर ; ताँबा, काँसा तथा सोने जैसी धातुएँ ; तथा शंख, फ़यॉन्स और पकी मिट्टी, सभी का प्रयोग मनके बनाने में होता था।

मनकों का आकार :- कुछ मनके दो या उससे अधिक पत्थरों को आपस में जोड़कर बनाए जाते थे और कुछ सोने के टोप वाले पत्थर के होते थे। इनके कई आकार होते थे। जैसे - चक्राकार, बेलनाकार, गोलाकार, ढोलाकार तथा खंडित। मनकों को उत्कीर्णन तथा चित्रकारी के माध्यम से सजाया गया था।

शिल्प निर्माण की विधियाँ :- सेलखड़ी मुलायम पत्थर था अत: आसानी से इसके चूर्ण के लेप को साँचे में ढाल कर मनके तैयार किए जाते थे।

कार्नीलियन का लाल रंग पीले रंग के कच्चे माल तथा उत्पादन के विभिन्न चरणों में मनकों को आग में पका कर प्राप्त किया जाता था। पत्थर के पिंडों को पहले अपरिष्कृत आकारों में तोड़ा जाता था और फिर बारीकी से शल्क निकालकर इन्हें अंतिम रूप दिया जाता था। घिसाई, पॉलिश और इनमें छेद करने के साथ ही यह प्रक्रिया पूर्ण होती थी।

शिल्प निर्माण में संलग्न बस्तियाँ :- चन्हुदड़ो, मोहनजोदड़ो (125 हेक्टेयर) की तुलना में एक बहुत छोटी (7 हेक्टेयर) बस्ती है जो लगभग पूरी तरह से शिल्प-उत्पादन में संलग्न थी। चन्हुदड़ो, लोथल और हाल ही में धौलावीरा से छेद करने के विशेष उपकरण मिले हैं।

नागेश्वर तथा बालाकोट जो समुद्र तट के समीप स्थित है, शंख से बनी वस्तुओं जिनमें चूड़ियाँ, करछियाँ तथा पच्चीकारी की वस्तुएँ सम्मिलित हैं, के निर्माण के विशिष्ट केंद्र थे जहाँ से यह माल दूसरी बस्तियों तक ले जाया जाता था। चन्हुदड़ो और लोथल से तैयार माल (जैसे मनके) मोहनजोदड़ो और हड़प्पा जैसे बड़े शहरी केंद्रों तक लाया जाता था।

**अथवा**

भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के पहले डायरेक्टर जनरल 'कनिंघम' ने उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में पुरातात्विक उत्खनन प्रारंभ किए। उस समय तक पुरातत्वविद लिखित स्रोतों जैसे साहित्य तथा अभिलेखों का प्रयोग अधिक पसंद करते थे।

कनिंघम की मुख्य रूचि भी छठी शताब्दी ईसा पूर्व से चौथी शताब्दी ईसवी तक इन्हीं स्रोतों के प्रयोग में थी। उन्होंने चौथी से सातवीं शताब्दी ईसवी के बीच भारत आए चीनी बौद्ध तीर्थ यात्रियों द्वारा छोड़े गए वृत्तांतों का प्रयोग किया। अभिलेखों का संग्रहण प्रलेखन तथा अनुवाद भी किया। उत्खनन के समय भी सांस्कृतिक महत्व की पुरावस्तुओं को खोजने का प्रयास करते थे।

कनिंघम का मानना था कि भारतीय इतिहास का प्रारंभ गंगा की घाटी में पनपे पहले शहरों के साथ ही हुआ था। एक अंग्रेज़ ने कनिंघम को एक हड़प्पाई मुहर दी थी। हड़प्पाई पुरावस्तुएँ जो 19वीं शताब्दी में प्राप्त हुई थीं, तथा कुछ कनिंघम तक पहुँची भी थीं परंतु वे समझ नहीं पाए कि ये पुरावस्तुएँ कितनी प्राचीन थीं। कनिंघम हड़प्पा के महत्व को समझने में चूक गए।

एक नवीन प्राचीन सभ्यता :- बीसवीं शताब्दी के आरंभिक दशकों में दयाराम साहनी ने हड़प्पा से तथा उसके पश्चात राखलदास बनर्जी ने उसी प्रकार की मुहरें मोहनजोदड़ो से खोज निकाली। जिससे अनुमान लगाया गया कि ये दोनों पुरास्थल एक ही पुरातात्विक संस्कृति के भाग थे। इन्हीं खोजों के आधार पर 1924 ईसवी में भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के डायरेक्टर जनरल जॉन मार्शल ने पूरे विश्व के समक्ष सिंधु घाटी में एक नवीन सभ्यता की खोज की घोषणा की।

एस एन राव "द स्टोरी ऑफ़ इंडियन आर्कियोलॉजी" में लिखा है कि मार्शल ने भारत को जहाँ पाया था, उसे उससे 3000 वर्ष पीछे छोड़ा। ऐसा इसलिए था क्योंकि मेसोपोटामिया के पुरास्थलों में हुए उत्खननों से हड़प्पा पुरास्थलों पर मिली मुहरों जैसी, पर तब तक पहचानी न जा सकीं, मुहरें मिली थीं। इस प्रकार विश्व

को न केवल एक नयी सभ्यता की जानकारी मिली, पर यह भी कि वह मेसोपोटामिया के समकालीन थी।

जॉन मार्शल, पुरास्थल के स्तर विन्यास की बजाय पूरे टीले में समान परिमाण वाली नियमित क्षैतिज इकाईयों के साथ-साथ उत्खनन करने का प्रयास करते थे। जिसके परिणाम स्वरूप अलग-अलग स्थानों से संबंध होने पर भी एक ही इकाई विशेष से प्राप्त सभी पुरावस्तुओं को सामूहिक रूप से वर्गीकृत कर दिया जाता था। जिससे बहुमूल्य जानकारी हमेशा के लिए लुप्त हो जाती थी।

**22.**

i. भारतीय राष्ट्रवाद को जन आंदोलन के रूप में परिवर्तित करना :- 1922 तक गाँधी जी ने भारतीय राष्ट्रवाद को एकदम परिवर्तित कर दिया और इस प्रकार फरवरी 1916 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में अपने भाषण में किए गए वायदे को उन्होंने पूरा किया। अब यह व्यावसायिकों व बुद्धिजीवियों का ही आंदोलन नहीं रह गया था, अब हज़ारों की संख्या में किसानों, श्रमिकों और कारीगरों ने भी इसमें भाग लेना शुरू कर दिया। इनमें से कई गाँधी जी के प्रति आदर व्यक्त करते हुए उन्हें अपना 'महात्मा' कहने लगे।

ii. सामान्य जनता से घनिष्ठ संबंध :- गाँधी जी सामान्य जनता की ही तरह के वस्त्र पहनते थे, उनकी ही तरह रहते थे और उनकी ही भाषा में बोलते थे। अन्य नेताओं की तरह वे सामान्य जनसमूह से अलग नहीं खड़े होते थे बल्कि वे उनसे समानुभूति रखते तथा उनसे घनिष्ठ संबंध भी स्थापित कर लेते थे।

iii. गाँधी जी का सादगी तथा शारीरिक श्रम को महत्व देना :- सामान्य जन के साथ इस तरह की पहचान उनके वस्त्रों में विशेष रूप से परिलक्षित होती थी। जहाँ अन्य राष्ट्रवादी नेता पश्चिमी शैली के सूट अथवा भारतीय बंदगला जैसे औपचारिक वस्त्र पहनते थे वहीं गाँधी जी लोगों के बीच एक साधारण धोती में जाते थे। इस बीच, प्रत्येक दिन का कुछ हिस्सा वे चरखा चलाने में बिताते थे। अन्य राष्ट्रवादियों को भी उन्होंने ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित किया। सूत कताई के कार्य ने गाँधी जी को पारंपरिक जाति व्यवस्था में प्रचलित मानसिक श्रम और शारीरिक श्रम की दीवार को तोड़ने में मदद दी।

iv. चरखे के साथ महात्मा गाँधी भारतीय राष्ट्रवाद की सर्वाधिक स्थायी पहचान :- 1921 में दक्षिण भारत की यात्रा के दौरान गाँधी जी ने अपना सिर मुँडवा लिया और गरीबों के साथ अपना तादात्म्य स्थापित करने के लिए उन्होंने सूतीवस्त्र पहनना आरंभ कर दिया। उनका यह नया रूप तपस्या और संयम का प्रतीक बना और ये ऐसी विशेषताएँ थीं जिनका गाँधीजी, आधुनिक विश्व की उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रतिउत्तर में, गुणगान करते थे।

v. किसानों के हृदय में गाँधीजी के प्रति अपार स्नेह :- इतिहासकार शाहिद अमीन ने एक मंत्रमुग्ध कर देने वाले अध्ययन में स्थानीय प्रेस द्वारा ज्ञात रिपोर्टों और अफ़वाहों के रिए पूर्वी उत्तर प्रदेश के किसानों के मन में महात्मा गाँधी के प्रति अपार स्नेह का पता चलता है। फरवरी 1921 में जब वे इस क्षेत्र से गुज़र रहे थे तो हर जगह भीड़ ने उनका बड़े प्यार से स्वागत किया।

vi. किसानों के उद्धारक :- 'गाँधी बाबा', 'गाँधी महाराज' अथवा सामान्य 'महात्मा' जैसे अलग-अलग नामों से ज्ञात गाँधी जी भारतीय किसान के लिए एक उद्धारक के समान थे जो उनकी ऊँची करों और दमनात्मक अधिकारियों से सुरक्षा करने वाले और उनके जीवन में मान-मर्यादा और स्वायत्तता वापस लाने वाले थे। ग़रीबों विशेषकर किसानों के बीच गाँधी जी की अपील को उनकी सात्विक जीवन शैली और उनके द्वारा धोती तथा चरखा जैसे प्रतीकों के विवेकपूर्ण प्रयोग से बहुत बल मिला।

vii. गाँधी जी का व्यक्तित्व :- जाति से महात्मा गाँधी एक व्यापारी व पेशे से वकील थे, लेकिन उनकी सादी जीवन-शैली तथा हाथों से काम करने के प्रति उनके लगाव की वजह से वे गरीब श्रमिकों के प्रति बहुत अधिक समानुभूति रखते थे तथा बदले में वे लोग गाँधी जी से समानुभूति रखते थे। जहाँ अधिकांश अन्य राजनीतिक उन्हें कृपा की दृष्टि से देखते थे वहीं ये न केवल उनके जैसा दिखने बल्कि उन्हें अच्छी तरह समझने और उनके जीवन के साथ स्वयं को जोड़ने के लिए सामने आते थे।

viii. महात्मा गाँधी का जन अनुरोध :- महात्मा गाँधी का जन अनुरोध निस्संदेह कपट से मुक्त था। राष्ट्रवाद के आधार को और व्यापक बनाने में उनकी सफलता का राज उनके द्वारा सावधानीपूर्वक किया गया संगठन था। भारत के विभिन्न भागों में कांग्रेस की नयी शाखाएँ खोली गयी। रजवाड़ों में राष्ट्रवादी सिद्धान्त को बढ़ावा देने के लिए 'प्रजा मंडलों' की एक श्रृंखला स्थापित की गई। गाँधी जी ने राष्ट्रवादी संदेश का संचार शासकों की अंग्रेज़ी भाषा की जगह मातृ भाषा में करने को प्रोत्साहित किया। राष्ट्रवाद देश के सुदूर हिस्सों तक फैल गया और अब इसमें वे सामाजिक वर्ग भी शामिल हो गए जो अभी तक इससे अछूत थे।

ix. गरीबों किसानों तथा समृद्ध व्यापारियों तथा उद्योगपतियों का समर्थन :- कांग्रेस के समर्थकों में कुछ बहुत ही समृद्ध व्यापारी और उद्योगपति शामिल हो गए थे। जी. डी. बिड़ला जैसे कुछ उद्यमियों ने राष्ट्रीय आंदोलन का खुला समर्थन किया जबकि अन्य ने ऐसा मौन रूप से किया। इस प्रकार गाँधी जी के प्रशंसकों में गरीब किसान और धनी उद्योगपति दोनों ही थे।

x. एक समाज सुधारक के रूप में :- महात्मा गाँधी फरवरी 1924 में जेल से रिहा हो गए और अब उन्होंने अपना ध्यान घर में बुने कपड़े (खादी) को बढ़ावा देने तथा छूआ-छूत को समाप्त करने पर लगाया। गाँधी जी राजनीतिक जितने थे उतने ही वे समाज सुधारक थे। उनका विश्वास था कि स्वतंत्रता के योग्य बनने के लिए भारतीयों को बाल विवाह और छुआ-छूत जैसी सामाजिक बुराइयों से मुक्त होना पड़ेगा। एक मत के भारतीयों को दूसरे मत के भारतीयों के लिए सच्चा संयम लाना होगा और इस प्रकार उन्होंने हिंदू-मुसलमानों के बीच सौहार्द्र पर बल दिया।

**अथवा**

चंपारन, अहमदाबाद और खेड़ा में की गई पहल से गाँधी जी एक ऐसे राष्ट्रवादी के रूप में उभरे जिनमें गरीबों के लिए गहरी सहानुभूति थी।

असहयोग आंदोलन एक प्रतिरोध के रूप में :-

i. रॉलेट एक्ट के खिलाफ अभियान :- 1914-18 के महान युद्ध के दौरान अंग्रेज़ों ने प्रेस पर प्रतिबंध लगा दिया था और बिना जाँच के कारावास की अनुमति दे दी थी। विश्व युद्ध की समाप्ति के पश्चात् भी सर सिडनी रॉलेट की अध्यक्षता वाली एक समिति की संस्तुतियों के आधार पर इन कठोर उपायों को जारी रखा गया। इसके जवाब में गाँधी जी ने देशभर में 'रॉलेट एक्ट' के खिलाफ एक अभियान चलाया। उत्तरी और पश्चिमी भारत के कस्बों में चारों तरफ बंद के समर्थन में दुकानों और स्कूलों के बंद होने के कारण जीवन लगभग ठहर सा गया था।

ii. जलियाँवाला बाग हत्याकांड :- पंजाब में, विशेष रूप से कड़ा विरोध हुआ, जहाँ के बहुत से लोगों ने युद्ध में अंग्रेज़ों के पक्ष में सेवा की थी और अब अपनी सेवा के बदले वे ईनाम की अपेक्षा कर रहे थे। लेकिन इसकी जगह उन्हें रॉलेट एक्ट दिया गया। पंजाब जाते समय गाँधी जी को कैद कर लिया गया। स्थानीय कांग्रेसजनों को गिरफ्तार कर लिया गया था। प्रांत की यह स्थिति धीरे-धीरे और तनावपूर्ण हो गई तथा अप्रैल 1919 में अमृतसर में यह खूनखराबे के चरमोत्कर्ष पर ही पहुँच गई। जब एक अंग्रेज़ ब्रिगेडियर ने एक राष्ट्रवादी सभा पर गोली चलाने का हुक्म दिया तब जलियाँवाला बाग हत्याकांड के नाम से जाने गए इस हत्याकांड में चार सौ से अधिक लोग मारे गए। रॉलेट सत्याग्रह से ही गाँधी जी एक सच्चे राष्ट्रीय नेता बन गए।

असहयोग आंदोलन के कार्यक्रम :- रॉलेट सत्याग्रह की सफलता से उत्साहित होकर गाँधी जी ने अंग्रेज़ी शासन के खिलाफ 'असहयोग' अभियान की माँग कर दी। जो भारतीय उपनिवेशवाद का खात्मा करना चाहते थे उनसे आग्रह किया गया कि वे स्कूलों, कॉलेजों और न्यायालय न जाएँ तथा कर न चुकाएँ। संक्षेप में सभी को अंग्रेज़ी सरकार के साथ (सभी) ऐच्छिक संबंधों के परित्याग का पालन करने को कहा गया।

स्वराज की प्राप्ति :- गाँधी जी ने कहा कि यदि असहयोग का ठीक ढंग से पालन किया जाए तो भारत एक वर्ष के भीतर स्वराज प्राप्त कर लेगा।

गाँधी जी द्वारा खिलाफ़त आंदोलन को असहयोग आंदोलन के साथ मिलाना :- अपने संघर्ष का और विस्तार करते हुए उन्होंने खिलाफ़त आंदोलन के साथ हाथ मिला लिए जो हाल ही में तुर्की शासक कमाल अतातुर्क द्वारा समाप्त किए गए सर्व-इस्लामवाद के प्रतीक खलीफ़ा की पुनर्स्थापना की माँग कर रहा था। गाँधी जी ने यह आशा की थी कि असहयोग को खिलाफ़त के साथ मिलाने से भारत के दो प्रमुख धार्मिक समुदाय- हिंदू और मुसलमान मिलकर औपनिवेशिक शासन का अंत कर देंगे।

असहयोग आंदोलन की प्रगति :-

i. विद्यार्थियों ने सरकार द्वारा चलाए जा रहे स्कूलों और कॉलेजों में जाना छोड़ दिया।

ii. वकीलों ने अदालत में जाने से मना कर दिया।

iii. कई कस्बों और नगरों में श्रमिक-वर्ग हड़ताल पर चला गया।

iv. सरकारी आंकड़ों के मुताबिक 1921 में 396 हड़तालें हुई जिनमें 6 लाख श्रमिक शामिल थे और इससे 70 लाख कार्यदिवसों का नुकसान हुआ था।

v. देहात भी असंतोष से आंदोलित हो रहा था। उत्तरी आंध्र की पहाड़ी जनजातियों ने वन्य कानूनों की अवहेलना कर दी। अवध के किसानों ने कर नहीं चुकाए। कुमाऊँ के किसानों ने औपनिवेशिक अधिकारियों का सामान ढोने से मना कर दिया।

विरोध आंदोलनों द्वारा स्थानीय राष्ट्रवादी नेतृत्व की अवज्ञा :- इन विरोध आंदोलनों को कभी-कभी स्थानीय राष्ट्रवादी नेतृत्व की अवज्ञा करते हुए कार्यान्वित किया गया। किसानों, श्रमिकों और अन्य ने इसकी अपने ढंग से व्याख्या की तथा औपनिवेशिक शासन के साथ 'असहयोग' के लिए उन्होंने ऊपर से प्राप्त निर्देशों पर टिके रहने के बजाय अपने हितों से मेल खाते तरीकों का इस्तेमाल कर कार्यवाही की।

असहयोग आंदोलन का प्रभाव :- असहयोग शांति की दृष्टि से नकारात्मक किंतु प्रभाव की दृष्टि से बहुत सकारात्मक था। इसके लिए प्रतिवाद, परित्याग और स्व-अनुशासन आवश्यक थे। यह स्वशासन के लिए एक प्रशिक्षण था।' 1857 के विद्रोह के बाद पहली बार असहयोग आंदोलन के परिणामस्वरूप अंग्रेज़ी राज की नींव हिल गई।

चौरी-चौरा कांड असहयोग आंदोलन का अंत :- फरवरी 1922 में किसानों के एक समूह ने संयुक्त प्रांत के चौरी-चौरा पुरवा में एक पुलिस स्टेशन पर आक्रमण कर उसमें आग लगा दी। इस अग्निकांड में कई पुलिस वालों की जान चली गई। हिंसा की इस कार्यवाही से गाँधी जी को यह आंदोलन तत्काल वापस लेना पड़ा।

सरकार द्वारा आंदोलन का दमन तथा गाँधी जी गिरफ़्तारी :- असहयोग आंदोलन के दौरान हजारों भारतीयों को जेल में डाल दिया गया। स्वयं गाँधी जी को मार्च 1922 में राजद्रोह के आरोप में गिरफ़्तार कर लिया गया। गाँधी जी ने कानून की अवहेलना की थी अतः गाँधी जी को 6 वर्षों की जेल की सज़ा सुनाई गई।

**23.**

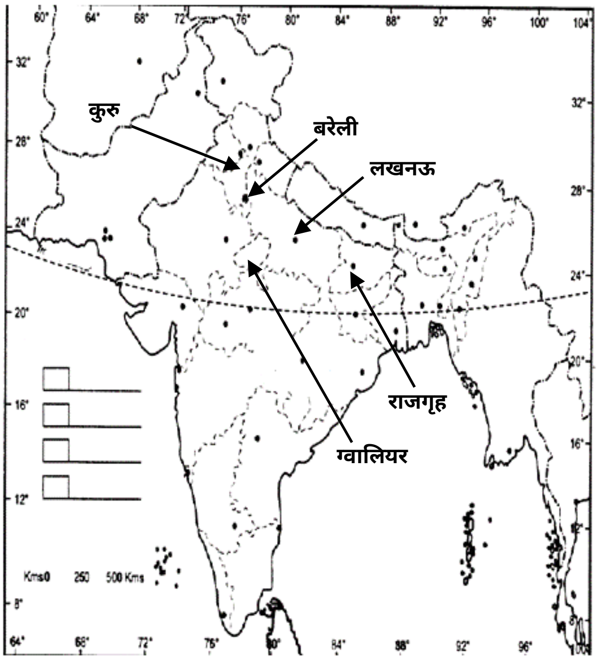

**अथवा**

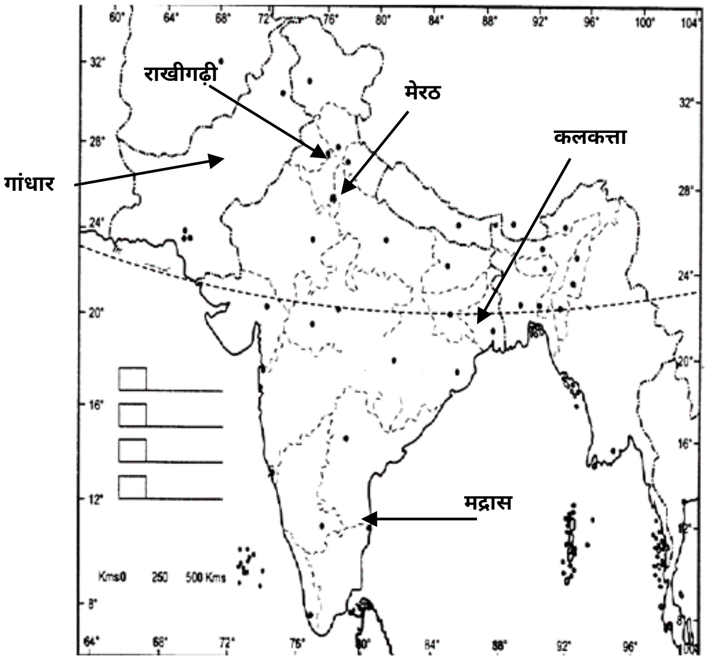


♦♦♦

UTKARSH CLASSES

#अब कामयाबी पर होगा सबका हक़

UTKARSH CLASSES | CLASS 6-12

Smart e-Learning Programme

# उत्कर्ष एप से घर बैठे कीजिए ऑनलाइन ट्यूशन और बनिए क्लास में टॉपर

**उत्कर्ष एप में गुणवत्तामूलक स्कूली शिक्षा के ऑनलाइन कोर्सेस नाममात्र के शुल्क में उपलब्ध**

QR Code Scan कर आज ही **'उत्कर्ष एप'** डाउनलोड करें

## Academic Session 2022-23

| | | | |
|---|---|---|---|
| Class VI-VIII | ~~₹10,000~~ | ₹1999 | CBSE \| RBSE & Other 7 State Boards |
| Class IX-X | ~~₹15,000~~ | ₹2999 | |
| Class XI-XII | ~~₹18,000~~ | ₹3499 | |

| | |
|---|---|
| ₹1200/- per subject Live | ₹600/- per subject Recorded |

Class XI-XII (Science, Commerce & Arts)

- **LIVE & Recorded Classes**
- **English & Hindi Medium**

आज से ही बनाएँ अपनी पढ़ाई को और बेहतर Utkarsh Online Tuition के साथ

### उत्कर्ष एप ही क्यों ?

- विख्यात व अनुभवी विषय-विशेषज्ञों की टीम
- फैकल्टी द्वारा हस्तलिखित पैनल PDF & e-Notes
- नियमित टेस्ट द्वारा मूल्यांकन (MCQs & Self Assessment)
- टॉपिकवाइज़ क्विज़ एवं उनका वीडियो व्याख्यान
- Live Poll during interactive classes.
- 4K डिजिटल पैनल पर इंटरैक्टिव कक्षाएँ
- 360° Rapid Revision.

15 M+ SUBSCRIBERS
2 M+ SUBSCRIBERS
10 M+ DOWNLOADS
1 M+ FOLLOWERS

## UTKARSH CLASSES

www.utkarsh.com support@utkarsh.com